अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) अन्तकृद्दशा सूत्र में वर्णित भगवान अरिष्टनेमि के शासन के पुरुषों का निर्वाण स्थल रहा-
(क) शमशान (ख) शत्रुंजय पर्वत
(ग) क एवं ख दोनों (घ) विपुलगिरी पर्वत (ग)

(b) अन्तकृद्दशा सूत्र में वर्णित भगवान महावीर के शासन में कितनी स्त्रियाँ केवली हुईं-
(क) 33 (ख) 10
(ग) 23 (घ) 16 (ग)

(c) ज्योतिषी की आगति कौनसे देवलोक की आगति के समान है-
(क) पहले (ख) तीसरे
(ग) नौवें (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(d) स्थलचर कौनसी नरक तक जा सकते हैं-
(क) दूसरी (ख) तीसरी
(ग) चौथी (घ) पाँचवीं (ग)

(e) कितनी नरक से आने वाला केवली बन सकता है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 7 (ख)

(f) माण्डलिक राजा की गति है-
(क) 276 (ख) 275
(ग) 329 (घ) 535 (घ)

(g) कौन अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करता है-
(क) नारकी (ख) युगलिक
(ग) देवता (घ) तीनों ही (घ)

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अधिकतम कौनसे देवलोक तक जा सकते हैं-
(क) दूसरे (ख) पाँचवें
(ग) आठवें (घ) बारहवें (ग)

(i) बिजली चमकने पर कितने प्रहर की अस्वाध्याय होती है-
(क) आठ (ख) दो
(ग) एक (घ) तीन (ग)

(j) पाँचवाँ अंगसूत्र है-
(क) समवायांग (ख) भगवती
(ग) ज्ञाताधर्मकथांग (घ) उपासकदशांग (ख)

(k) पौषध व्रत कौनसा शिक्षा व्रत है-
(क) पहला (ख) दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चौथा (ग)

(l) उपवास युक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन नहीं करना है-
(क) अतिक्रम (ख) व्यतिक्रम
(ग) अतिचार (घ) अनाचार (ग)

(m) अनुयोगद्वार सूत्र के ज्ञान प्रमाणाधिकार में आगम के प्रकार बतलाये हैं-
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) बत्तीस (ख)

(n) शीतकाल में श्वेत धूँवर का आना कहलाता है-
(क) यूपक (ख) यक्षादीप्त
(ग) धूमिका (घ) महिका (घ)

(o) उपांग सूत्र में कालिक सूत्र है-
(क) उववाई (ख) पन्नवणा
(ग) सूरपन्नत्ति (घ) चंदपन्नत्ति (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) भिक्षुप्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुत स्कन्ध में मिलता है। (हाँ)
(b) अन्तकृद्दशासूत्र में वर्णित गजसुकुमाल मुनि बाल ब्रह्मचारी नहीं थे। (नहीं)
(c) 18 पापों का त्याग करके जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है। (नहीं)
(d) 'जयन्ती बाई के प्रश्नोत्तर' भगवती सूत्र में वर्णित है। (हाँ)
(e) जीवों का भवसिद्धिपना परिणाम से हैं। (नहीं)
(f) व्यवहार राशि के सभी जीव भवी हैं। (नहीं)
(g) धर्मी जीव जागते हुए अच्छे हैं। (हाँ)
(h) नपुंसक वेदी एवं नो गर्भज की आगति समान है। (नहीं)
(i) स्त्रीवेद वाले सातवीं नारकी में नहीं जाते हैं। (हाँ)
(j) बलदेव अवश्य ही साधु बनते हैं। (हाँ)
(k) तीर्थंकर एवं केवली की आगति समान होती है। (नहीं)
(l) 179 की लड़ में सभी तिर्यंच शामिल हैं। (नहीं)
(m) युद्धादि का वातावरण होने पर स्वयं स्वाध्याय नहीं कर सकते हैं। (नहीं)
(n) तीर्थंकर द्वारा कथित अर्थ गणधर के लिए आत्मागम है। (नहीं)
(o) पौषध व्रत ग्रहण करने के बाद उसके 18 दोष होते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	कनकावली	(क) अगन्धन कुल	सोलह उपवास तक-मध्य में तेले
(b)	थलचर की आगति	(ख) 83	267
(c)	रत्नावली तप	(ग) कालिक	सोलह उपवास तक-मध्य में बेले
(d)	जैन श्रमण	(घ) 267	भ्रमरवृत्ति
(e)	चक्रवर्ती की आगति	(च) सोलह उपवास तक-मध्य में बेले	82
(f)	उत्तराध्ययन सूत्र	(छ) 276	कालिक
(g)	दशवैकालिक सूत्र	(ज) 82	उत्कालिक
(h)	श्रावक की आगति	(झ) सोलह उपवास तक-मध्य में तेले	276
(i)	सर्प	(य) भ्रमरवृत्ति	अगन्धन कुल
(j)	बलदेव की आगति	(र) उत्कालिक	83

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं लोक में आरम्भ आदि से मुक्त होता हूँ। साधु/श्रमण
(b) मैं भोजराज उग्रसेन की पुत्री हूँ। सती राजीमती
(c) मैंने सुभाषित वचनों से भोगों से मन मोड़ लिया। पुरुषोत्तम रथनेमि
(d) मैं ऐसा तप हूँ जिसमें पारणे के दिन उपवास किया जाता है। आयम्बिल वर्धमान तप
(e) मुझे मोक्ष में जाने से पूर्व संथारा नहीं आया। गज सुकुमाल मुनि
(f) मैं भगवान महावीर के काल में प्रवर्तिनी हुई। आर्या चन्दनबाला
(g) मैं आगामी चौबीसी में 'पद्मनाभ' नामक तीर्थंकर बनूँगा। राजा श्रेणिक
(h) मेरे आचरण से जीव भारी होता है। 18 पाप

(i) हम ऐसे जीव हैं, जो मोक्ष प्राप्त करेंगे। भवसिद्धिक

(j) मेरी आगति 363 की है। सम्यग्दृष्टि

(k) हम ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी गति सिर्फ देवलोक है। युगलिक/अकर्मभूमिज/अन्तर्द्वीपज

(l) मैं ऐसी नारकी हूँ, जिसकी गति सिर्फ तिर्यंच हैं। सातवीं नारकी

(m) योगशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना मैंने की है। आचार्य हेमचन्द्र

(n) हम अर्द्धमागधी भाषा में रचित हैं तथा जिन-प्रणीत हैं। जैनागम/ आगम

(o) हममें साधुओं के सबल दोष एवं प्रायश्चित्त का विद्यान है। छेद सूत्र

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) धम्मो.....सया मणो।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

(b) जे य..... त्ति वुच्चई।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठी कुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ।।

(c) अप्पा.....परत्थ य।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।

(d) सोही.....पावए।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घय-सित्तव्व पावए।।

(e) बादर पृथ्वीकाय की आगति को समझाइए।
आगति 243 की- 179 की लड़ (101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य, 30 कर्मभूमिज मनुष्य, 48 तिर्यंच) और 10 भवनपति, 15 परमाधार्मिक, 16 वाणव्यन्तर 10 जृंभक, 10 ज्योतिषी, पहला किल्विषी और पहला, दूसरा देवलोक। इस प्रकार 64 जाति के देवता के पर्याप्ता 179+64 =243

(f) ''प्रभुता.....किसके लिए।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।
प्रभुता न मुझमें स्वप्न की भी, है चमकती देखिये,
तो भी भरा हूँ गर्व से, मैं मूढ़ हो किसके लिए ?

(g) 'सद्वृत्ति.....अर्जिता।।' को पूर्ण कीजिए।
सद्वृत्ति से मन में न मैंने, साधुता हा! साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी, मैंने नहीं कुछ अर्जिता।

(h) नित्योदयं.....शशांकबिम्बम्।। श्लोक को पूर्ण कीजिए।
नित्योदयं दलित-मोह-महांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कांति, विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम्।।

(i) त्वामव्ययं.....प्रवदन्ति सन्तः।। श्लोक को पूर्ण कीजिए।
त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वर-मनन्त-मनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) त्यागी कौन कहलाता है ?
सुन्दर और रुचिकर भोग-सामग्री के मिलने पर भी उनसे पीठ करता है, यानी उसे ठुकरा देता है और प्राप्त भोगों को स्वेच्छा से छोड़ देता है, वह त्यागी कहलाता है।

(b) जहा दुमस्स.....अप्पयं।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

जैसे भँवरा फूलों पर प्राकृतिक मर्यादा से रसपान करके अपना पौषण कर लेता है और फूलों को पीड़ा उत्पन्न नहीं होने देता है। इसी प्रकार साधु अनेक घरों से थोड़ा-थोड़ा आहार ग्रहण करता है, जिससे कि उसका भी अच्छी तरह निर्वाह हो जाय और दूसरों के लिए भी अपने आहार में से थोड़ा सा दे देना कष्टदायक न हो।

(c) चार कषायों को साधक कैसे जीते ?

साधक क्रोध को उपशम अर्थात् क्षमा भाव से नष्ट करें। मार्दव (मृदुता) भाव से, विनम्रता से मान पर विजय प्राप्त करे। सरलता से माया (कपट) पर विजय पाए और लोभ को सन्तोष वृत्ति से जीते।

(d) अप्पा.....सुप्पट्ठिओ।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

आत्मा ही अपने सुख-दुःख का कर्त्ता और विकर्त्ता (भोक्ता) है। सत्प्रवृत्तियों में स्थित आत्मा ही अपना मित्र है और दुष्प्रवृत्तियों में स्थित आत्मा ही अपना शत्रु है।

(e) श्रोत्रेन्द्रिय के वश हुआ जीव कैसे कर्म बान्धता है ?

आयुष्य कर्म को छोड़कर बाकी सात कर्मों की प्रकृति यदि ढीली हो तो गाढ़ी-दृढ करता है। थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मन्द रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है और चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

(f) 'रत्नत्रयी.....किसके यहाँ ?' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

रत्नत्रयी दुष्प्राप्य है, प्रभु से उसे मैंने लिया, बहुकाल तक बहुबार जब,
जग का भ्रमण मैंने किया। हा! खो गया वह भी विवश, मैं नींद आलस में रहा,
अब बोलिए उसके लिए, रोऊँ प्रभो! किसके यहाँ?

(g) 'सत्कर्म.....कैसे नष्ट हो?' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

सत्कर्म पहले जन्म में मैंने किया कोई नहीं, आशा नहीं जनमान्य में,
उसको करुँगा मैं कहीं। इस भाँति का यदि हूँ जिनेश्वर!
क्यों न मुझकों कष्ट हो? संसार में फिर जन्म मेरे, त्रिविध कैसे नष्ट हो।

(h) नास्तं.....मुनीन्द्र! लोके।। श्लोक का भावार्थ लिखिए।

इसमें सूर्य और भगवान की तुलना करते हुए बताया कि सूर्य शाम को अस्त हो जाता है, उसे बादल ढक लेते हैं, राहू ग्रस लेता है, किन्तु आपका महातेज इन दोषों से रहित है तथा तीनों लोक को एक साथ प्रकाशित करने वाला है।

(i) बुद्धस्त्वमेव.....पुरुषोत्तमोऽसि।। श्लोक का भावार्थ लिखिए।

इसमें भगवान को बुद्ध, शंकर, विधाता तथा नारायण बताया गया है। भगवान केवलज्ञानी होने से बुद्ध, कल्याणकारी होने से शंकर, विधानकर्त्ता होने से विधाता तथा पुरुषों में उत्तम होने से नारायण हैं।